**प्रेस विज्ञप्ति**

## बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया ओआरसी का 16वाँ वार्षिक जन्मोत्सव

## परमात्मा का सबसे बड़ा उपहार मानव की विचारशीलता- डा॰ स्वामी शास्वतानन्द गिरी

## मानवता एवं दया ही जीवन के सच्चे पथ- अनूप कुमार वार्ष्णेय

## सबके साथ स्नेहयुक्त व्यवहार ही मानव की सबसे बड़ी पूँजी- दादी रतन मोहिनीजी

**11 दिसम्बर 2017, गुरूग्राम**

परमात्मा का सबसे बड़े से बड़ा उपहार मानव की विचारशीलता है। परमात्मा ने ये उपहार इसलिए प्रदान किया ताकि मानव उस तक पहुँच सके। हर मनुष्य आत्मा संस्कारों से निर्मित है। **उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के भोड़ाकलां स्थित ओम् शान्ति रिट्रीट सैन्टर के 16वें वार्षिक महोत्सव के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम पॉवर ऑफ ब्लेसिंग में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी के महामण्डलेश्वर डा॰ स्वामी शास्वतानन्द गिरीजी महाराज ने व्यक्त किए।** उन्होंने कहा कि भौतिक देह के आकर्षण से ऊपर उठ, आत्मा के गहरे अनुभव से ही हम परमानन्द को प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी जी ने कहा कि अपने सत्य स्वरूप की अनुभूति करने के लिए गहन चिन्तन और मनन की परम आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था शास्त्रों के मूल तत्व को जीवन में धारण करने के लिए सभी को प्रेरित करती है। स्वामी जी ने कहा कि कोई भी कार्य करने के लिए सच्ची निष्ठा का होना जरूरी है।

**केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार के संयुक्त सचिव अनूप कुमार वार्ष्णेय** ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मानवता एवं दया, ये दोनों ही हमारे सच्चे पथ हैं। इनके द्वारा ही हम सबकी आर्शीवाद प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि बड़ों का आदर और सम्मान ही उन्नति की सीढ़ी है।

**गुरूग्राम नगरपालिका के अतिरिक्त आयुक्त नरहरि सिंह बांगेर** ने अपनी शुभ कामनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि शरीर की सुन्दरता के साथ-साथ आत्मा की सुन्दरता पर ध्यान देने से ही व्यक्तित्व में निखार आता है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आत्मा की सुन्दरता को बढ़ाने का सराहनीय कार्य चल रहा है।

**इस अवसर पर विशेष रूप से माउण्ट आबू से पधारी ब्रह्माकुमारीज़ की ज्वाइंट चीफ दादी रतन मोहिनी जी** ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सबके साथ स्नेहयुक्त व्यवहार ही मानवता की सबसे बड़ी पूँजी है। दादीजी ने कहा कि चाहे कोई कैसा भी व्यक्ति हो लेकिन हमें सबको अपनी शुभ भावनाएं ही प्रदान करनी हैं। उन्होंने कहा कि हमारी श्रेष्ठ भावनाएं किसी का भी परिवर्तन कर सकती हैं। दादीजी ने कहा कि हमारे संस्कार ही हमें दु:खी करते हैं। संस्कारों को परिवर्तन करने के लिए हमें अपनी दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा।

**ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव भ्राता बृजमोहन जी** ने कहा कि वर्तमान समय परिवर्तन का समय है। उन्होंने कहा कि रासायनिक एवं परमाणु हथियार इसके प्रमाण हैं कि कैसे आज मानव महाविनाश की दहलीज़ पर खड़ा है। उन्होंने कहा कि ये वही महाभारत काल है जब एक ओर लड़ाई की तैयारी हो रही है और दूसरी ओर गुप्त रूप में ईश्वरीय शक्ति पुन: नई दुनिया की स्थापना का कार्य कर रही है।

**बी॰ के॰ शिवानी ने** अपने उद्बोधन में कहा कि हमारा हर विचार वायब्रेशन के रूप में वायुमण्डल का निर्माण करता है। हमारे विचार जितने पवित्र एवं सकारात्मक होंगे उतना ही हमारे आस-पास का वातावरण शक्तिशाली होगा। उन्होंने कहा कि हमारे गुण जब कर्मों से दिखते हैं तो वो ही हमारे लिए दुआ बन जाते हैं।

**इस अवसर पर विशेष रूप से पोलेण्ड दूतावास के सचिव एन्ड्रेज सुजिंस्की** ने कार्यक्रम के प्रति अपने विचार साझा करते हुए शुभ कामनाएं दी। **दादी कमलमणी, शुक्ला दीदी, गीता दीदी एंव चक्रधारी दीदी** ने भी कार्यक्रम में अपने विचार रखे।

**ओओरसी की निदेशिका आशा दीदी ने** कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभी मेहमानों के स्वागत में अपने ह्दय के उद्गार व्यक्त किए।

**कार्यक्रम में विशेष रूप से टॉक शो का भी आयोजन हुआ।** नाटक, गीत, नृत्य एवं कविता के माध्यम से भी सबने कार्यक्रम का आनन्द लिया। **कार्यक्रम का संचालन बी॰ के॰ उर्मिल एवं बी॰ के॰ मधु ने किया।** कार्यक्रम के अन्त में विशेष रूप से केक् काटा गया। कार्यक्रम में दिल्ली एवं एनसीआर के 5000 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

**<u>कैप्शनः</u>-** **1. डा॰ स्वामी शास्वतानन्द गिरी जी महाराज, पंचायती अखाड़ा श्री निरंजनी**

**2. अनूप कुमार वार्ष्णेय, संयुक्त सचिव केन्द्रीय कानून एवं न्याय मंत्रालय, भारत सरकार**

**3. नरहरि सिंह बांगेर, अतिरिक्त आयुक्त, नगरपालिका गुरूग्राम**

**4. एन्ड्रेज सुजिंस्की, सचिव पोलेण्ड दूतावास**

**5. दादी रतन मोहिनी जी, ज्वाइंट चीफ ऑफ ब्रह्माकुमारीज़**

**6. बृजमोहन जी, अतिरिक्त महासचिव ब्रह्माकुमारीज़**

**7. आशा दीदी, निदेशिका ओआरसी**

**8. बी॰ के॰ शिवानी**

**9. शुक्ला दीदी**

**10. केक् काटते हुए स्वामी शास्वतानन्द गिरी महाराज, बृजमोहन भाई, नरहरि सिंह, दादी रतन मोहिनी जी, दादी कमलमणी जी, आशा दीदी, शुक्ला दीदी, चक्रधारी दीदी, गीता दीदी एवं अन्य।**

**11. कार्यक्रम में उपस्थित जनसमूह**